टेक्नीकल इनपुट कार्यक्रम

विकास की दृष्टि से आवश्यक हैं कि किसानों को आर्थिक रूप से समृद्ध किया जाए,जिससे की वे गाँवों से नगरों की ओर पलायन न करें। ग्रामवासियों का नगरों की ओर पलायन तभी रूकेगा जब उन्हें गाँव में ही रोजगार के अवसर मिलेंगे। ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त स्वरोजगार के अवसर सृजित कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण एवं न्यूनतम पौष्टिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में दुग्ध उत्पादन व्यवसाय की महत्पूर्ण भूमिका है।

1. पात्रता-ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले कृषक/पशुपालक
2. योजना के अंतर्गत सुविधाएं-
   - अनुदानित दर पर संतुलित पशु आहार की बिक्री।
   - मिनरल फीड सप्लीमेंट,कैल्सियम तथा विटामिन सप्लीमेंट, दुग्ध वद्र्धक तथा अन्य पशु औषधि का वितरण।
   - दुग्ध संग्रहण व गुणवत्ता जांच हेतु समितियों को आवश्यक साज-सज्जा तथा अन्य इनपुट का वितरण।
   - डिपर्मींग, बांझपन निवारण एवं थनैला नियंत्रण कार्यक्रम।

Published on National Portal of India (http://www.india.gov.in)

- चारा काटने की मशीन, मिल्क बकेट एवं हाइजीन कीट का वितरण।

- ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादकता वृद्धि शिविर का आयोजन।

- हरा चारा बीज का वितरण।

- अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए अन्य इनपुट्स आदि की व्यवस्था।

3. किनसे संपर्क करें-सम्बंन्धित जिले के जिला गव्य विकास पदाधिकारी- पशुपालन एंव मत्स्य विभाग (गव्य विकास)

5. प्रक्रिया- विहित प्रपत्र में पशुपालक को सम्बन्धित जिले के जिला गव्य विकास पदाधिकारी के पास आवेदन जमा करना है।

6. किसी तरह की शिकायत होने पर गव्य विकास निदेशालय, नेपाल हाउस डोरंडा राँची को सूचित कर सकते हैं।